Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 8, Issue 1&2 - 2023, Pg. No. 26-28
Peer Reviewed Journal

Research Article

हिन्दुत्व की आन्तरिक शक्ति उसकी वैज्ञानिकता

Rameshwar Pandey

Assistant Professor, Department of Ancient History, National PG College Barhalganj, Gorakhpur, Uttar Pradesh, India.
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202301

I N F O

E-mail Id:
rameshwarnpg@gmail.com
Orcid Id:
https://orcid.org/0009-0001-2969-6174

Date of Submission: 2023-03-30
Date of Acceptance: 2023-05-02

सारांश

इस शोध पत्र में, लेखक हिन्दुत्व की आंतरिक शक्ति उसकी वैज्ञानिकता विषय पर विस्तार में प्रकाश डालता है। यह शोध पत्र हिंदुत्व की अवधारणा के आसपास के वैज्ञानिक पहलुओं का एक महत्वपूर्ण मूल्यांकन प्रदान करता है। सूक्ष्म अन्वेशण हिंदुत्व की विचारधारा से जुड़ी आंतरिक शक्ति के विभिन्न आयामों की पड़ताल करता है, इसके महत्व और निहितार्थों पर प्रकाश डालता है। हिंदुत्व की आंतरिक शक्ति उसके वैज्ञानिक स्वरूप में निहित है। हिंदुत्व, एक बहुआयामी सांस्कृतिक और राजनीतिक विचारधारा के रूप में, दार्शनिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मान्यताओं की एक श्रृंखला को समाहित करता है जो प्राचीन भारतीय ग्रंथों और परंपराओं में निहित हैं। यह जटिल विचारधारा वेदों, उपनिषदों और रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों से ली गई भारतीय संस्कृति और इतिहास की गहराई तक पहुँचती है। धर्म (धार्मिकता), कर्म (कार्य), और मोक्ष (मुक्ति) के इसके मूल सिद्धांत हिंदुत्व की आंतरिक शक्ति की नींव बनाते हैं।हिंदुत्व की वैज्ञानिक बुनियाद इसके दार्शनिक ढांचे से आगे बढ़कर विभिन्न विषयों में व्यावहारिक अनुप्रयोगों को शामिल करती है। प्राचीन भारतीय विद्वानों ने गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा और वास्तुकला में महत्वपूर्ण योगदान दिया और आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति की नींव रखी। शून्य की अवधारणा, दशमलव प्रणाली और आकाशीय गतिविधियों की समझ गहन वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि के कुछ उदाहरण हैं जो हिंदू विचार की समृद्ध टेपेस्ट्री से उत्पन्न हुई हैं।

मुख्य बिंदु: हिन्दुत्व, धर्म, कर्म, मोक्ष, गणित, भौतिक विज्ञान, आश्रम व्यवस्थायवर्ण।

हिन्दुत्व शब्द का प्रयोग भारतीयता के रूप में किया जाता है। हिन्दुत्व का तात्पर्य भारत की सम्पूर्ण भौगोलिक सीमा से है, जिसमें भारत की सभी जातियाँ समाहित है। वर्तमान में राजनीतिक स्वार्थवश हिन्दुत्व को सीमित कर दिया गया है लेकिन हिन्दुत्व को किसी सीमा में नहीं बाँधा जा सकता है। भारत में जितने भी सम्प्रदाय है कहीं न कहीं से उनकी उत्पत्ती हिन्दुत्व से हुई है। भारत में इतनी जनसंख्या होते हुए भी एवं इतने सम्प्रदायों में बंटे होने के बाद भी हिन्दुत्व पूरे भारतीय समाज को एक सूत्र में आबद्ध किये हुए हैं। हिन्दुत्व भारतीय समाज को एक शक्ति के रूप में पिरोने की आन्तरिक शक्ति उसकी वैज्ञानिकता है जिसके कारण हमारी पुरातन सभ्यता जो हजारों वर्षों से लगातार एवं अखण्डित चली आ रही है। जब कि हम जानते है कि इससे पहले सभ्य जीवन मिस्र और बेबिलोन में आरम्भ हुआ किन्तु इन राष्ट्रों के अतीत को वर्तमान से मिलाने वाली कड़ियाँ पूरी तरह से टूट चुकी हैं। जबकि हमारी हिन्दुत्व की आधारभूत धारणाएँ आध्यात्मिक, नैतिक एवं सामाजिक अब भी प्रयोग में आ रही हैं और हिन्दुत्व की स्थापिका उन्हीं के कारण बनी हुई है जिसके कारण हमारी भारतीय संस्कृति अनेक थपेड़ों को सहते हुए भी हजारों वर्ष से जीवित है।[1]

भारत एक भौगोलिक तथ्य है जो सागरों एवं पर्वतों से घिरा हुआ है। उत्तर में हिमालय एवं दक्षिण में समुद्र से घिरे इस क्षेत्रफल में जो लोग रहते हैं वे हिन्दू हैं, भारतीय है–फिर वे चाहे हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई जो भी हों भारत उन सबकी मातृभूमि है जो इसमें रहते हैं। वास्तव में हिन्दुत्व "भारतीयता" का ही पर्यायवाची है, क्यों कि हिन्दू शब्द विदेशियों द्वारा सिन्धु नदी के नाम का गलत

Copyright (c) 2023: Author(s). Published by Advanced Research Publications

उच्चारण करने से बना है। सुप्रीम कोर्ट ने भी हिन्दुत्व की व्याख्या विशद् रूप से की है कि भारत का प्रत्येक नागरिक हिन्दू है चाहे उसकी किसी भी धर्म–पन्थ में आस्था क्यों न हो। विश्व के अनेक विद्वानों, विचारकों तथा दार्शनिकों ने इस तथ्य को स्वीकार किये है हिन्दुत्व कुछ सिद्धान्तों, संस्कारों या विश्वासों की धर्म व्यवस्था मात्र ही नहीं है वरन् उन आधारभूत वैज्ञानिक तथ्यों पर व्यवस्थित है जिनमें अनेक युगों से यहाँ का नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक जीवन विकसित होता रहा है और उनसे हमारी भारत भूमि शक्ति एवं सम्पन्ना का अनुभव करता रहा है। हमारे यहाँ जो भी सिद्धान्त बनाये गये हैं वे पूर्ण वैज्ञानिक है इसी कारण अनेक ऐतिहासिक आघातों के बाद भी हिन्दुत्व की आन्तिरक शक्ति सदैव विद्यमान रही है और आगे भी बनी रहेगी।

हिन्दुत्व शुद्ध और सांस्कृतिक जीवन पद्धति का नाम है और वह हिन्दू धर्म के रूप में विकसित हुआ है अतः वह जातिगत संकीर्णताओं से भी प्रतिबंधित नहीं हुआ है। हिन्दुओं का एक विशिष्ट जाति बन जाने के बाद भी उसमें भेद–भाव या पक्षपात नहीं है, इसका मुख्य कारण यह है कि यह पूर्णतया सनातन नियमों पर आधारित है। यहाँ जीव के आत्म स्वरूप की कल्पना की गयी है। शरीर और उसके हितों को आत्मा की दृष्टि से ही मान्यता और सेवा मिली है शेष पूरा जीवन ही आनन्द की सात्विक उपलब्धि, आत्मकल्याण और विश्व की भलाई की भावना से ओत–प्रोत होता है। अतः भारत देश में जब भी अन्य देश के वर्ण, जाति के मनुष्य जब भी मिले वे हिन्दुत्व के रंग में रंग गये। जैसे यूनानी, शक्, पह्लव, कुषाण आदि भारतीय परिवेश को आत्मसात कर लिए।

हिन्दुत्व की आन्तरिक शक्ति के रूप में उसकी वैज्ञानिकता के संदर्भ में स्मिथ महोदय कहते है कि "बिना किसी संशय के भारत में एक गहन अन्तर्निहित मौलिक एकता है और उससें कहीं अगाध है जितनी भौगोलिक अलगाव अथवा राजनीतिक प्रभुसत्ता से आर्विभूत हो सकती है"।[2] यहाँ अनेक अज्ञात स्थानों से आये हुए मानयों की धारा इस देश में बहीं है जैस शक्, पह्लव, हूण, कुषाण, तुर्क, मुगल आदि। भारत सदैव से एक बहुभाषी, बहुजातिय और बहुधर्मी समाज रहा है यहाँ विविध जातियों एवं संस्कृतियों का संगम स्थल रहा है।

हिन्दुत्व की प्रमुख विशेषता उसके सत्य, शील और शक्ति है जो अनन्त तक हिन्दुओं को अक्षुण रखेगा। इन तीनों महा गुणों का विकास आत्मशोध की पूर्ण वैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर होता है। इस तथ्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है कि भारत में जब तक एक भी भारतीय (हिन्दू) इस संसार में बना रहेगा तब तक हिन्दुत्व नष्ट नहीं हो सकता है। जैसे बौद्ध धर्म के चरमोत्कर्ष काल में हिन्दुत्व का बहुत थोड़ा ही अवशेष बचा था, तब जगद्गुरू शंकराचार्य ने हिन्दुत्व के धार्मिक ज्योति को जलाया और पुनः सम्पूर्ण देश हिन्दुत्व की चेतना जगाने में सफल हुए।

भारतीय बौद्धिक क्षमता बहुत ही विलक्षण है जो तथ्य आज भौतिक विज्ञान प्रदर्शित कर रहा है उसे यहाँ केवल बालकों का खेल समझा जाता रहा है रावण, सहसत्रबाहू, भस्मासुर यह सब ऐसे वैज्ञानिक थे जिनके कृत्यों को यहाँ बहुत छोटा माना जाता है।

हिन्दू (भारतीय) अपनी आन्तरिक शक्ति के कारण वैज्ञानिकता के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति की। गणित विज्ञान आदि क्षेत्र में इनकी प्रगति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जैसे यज्ञ वेदियों के निर्माण में ज्यामिति के नियमों का ध्यान रखा जाता था। गणित के क्षेत्र में प्राचीन मनीषियों का योगदान महत्वपूर्ण है। जिनमें आर्यभट, भास्कराचार्य एवं ब्रह्मगुप्त आदि ने गणित तथा ज्यामिती के नियमों को विकसित करने का श्रेय दिया जाता है। भारतीयों को दशमलव प्रणाली का ज्ञान सदियों से रहा है। जिसे आगे चलकर अनेक देशों ने अपनाया। आर्यभट्ट के समय से ही वर्गमूल, घनमूल, त्रिकोणमिति, पिरामिड एवं वृत्त के सूक्ष्म गणित का विकास हुआ। इस ज्ञान की आन्तरिक शक्ति के कारण हिन्दुत्व अपने आलोक से पूरे विश्व को प्रभावित किया है। इसी प्रकार ज्योर्तिविज्ञान के क्षेत्र में विदेशियों ने हिन्दुओं से बहुत कुछ सीखा।

प्राचीन काल के चिकित्सक (भारतीय) भी तत्वज्ञानी होते थे। स्वास्थ्य की रक्षा के लिए स्वास्थ विज्ञान एवं औषधियों की ही मात्र जानकारी नहीं रखते थे वरन् मन और आत्मा की रोगोत्पत्ति तथा निवारण की मुख्य भूमिका होती थी। चरक, सुश्रुत एवं वाणभट्ट जैसे आयुर्वेदविदों की गणना शल्य चिकित्सकों के रूप में की जाती है। जो हिन्दुओं की आन्तिरिक शक्ति की वैज्ञानिकता को प्रमाणित करती है।

इसी प्रकार अध्यात्म, धर्म और दर्शन के क्षेत्र में भी यह भारत देश में अग्रणी था। यहाँ के मनीषी परिव्राजकगण ज्ञान की धाराओं को देश की सीमा से बाहर ले जाकर प्रवाहित करने तथा असंख्य लोगों के कल्याण हेतु सतत् कटिबद्ध रहे हैं। हिन्दुत्व के माध्यम से ही इनका प्रचार प्रसार देश विदेश में हो रहा है। वर्तमान में स्वामी रामदेव, श्री श्री रविशंकर जी आदि धर्मिक गुरुओं ने हिन्दुत्व के माध्यम से योग, अध्यात्म, धर्म और दर्शन की ज्योति भारत के साथ–साथ विदेशों में जलायी है।

प्राचीन भारतीय मनीषियों ने सामाजिक व्यवस्था को सुचार रूप से चलाने के लिए जिन वैज्ञानिक व्यवस्था को लागू किया उनमें वर्ण व्यवस्था का स्थान सर्वोपरि है। इसके अन्तर्गत सम्पूर्ण भारतीय समाज को चार वर्णों तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र में बांट कर प्रत्येक वर्ण के लिए कुछ आवश्यक नियमों एवं कर्तव्यों का निर्धारण किया गया था। जिससे प्रत्येक वर्ण उन नियमों को अपना धर्म और नैतिक कर्तव्य समझ कर उनका पालन करें। इस प्रकार हिन्दू धर्म में समाज की मूलभूत आवश्यकताओं को वैज्ञानिक ढंग से ध्यान में रखकर कार्य विभाजन किया गया जिससे व्यक्ति तथा समाज का समग्र विकास हो सके।[3]

इसी प्रकार आश्रम व्यवस्था की स्थापना हिन्दू समाज व्यवस्था को वैज्ञानिक ढ़ग से सुनियोजित एवं सुव्यवस्थित बनाने के उद्देश्य से की गयी थी। इसके अन्तर्गत सम्पूर्ण मानव जीवन को 100 वर्ष की आयु मानकर उसे 25–25 वर्ष के चार आश्रमों तथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास में विभाजन बड़े वैज्ञानिक ढंग से किया गया है जिससे प्रत्येक व्यक्ति अपनी शारीरिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक विकास कर सके।[4]

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202301

ऐसे भारतीय मनिषियों ने बड़े ही वैज्ञानिक ढंग से मनुष्य के जीवन को भौतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत बनाने हेतु जिस व्यवस्था की नियोजना की वह पूरूषार्थ है। पुरुषार्थ का सामान्य अर्थ है– विवेकशील प्राणी का लक्ष्य। वास्तव में पुरुषार्थों का उद्देश्य मनुष्य के भौतिक सुखों और आध्यात्मिक सुखों के बीच सामंजस्य स्थापित करना था। पुरुषार्थ मानव जीवन के विकास की वह संतुलित एवं वैज्ञानिक योजना है जिसमें न तो सांसारिक भोग विलास की अवहेलना की गई है और न ही जीवन के उच्चतर आदर्शों से व्यक्ति को वंचित रखने का प्रयास किया गया है। पुरुषार्थ की वैज्ञानिक योजना का मूल आधार मनुष्य का सर्वाङ्गिण विकास करना है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष से चार पुरुषार्थ माने गये हैं। पुरुषार्थ मानव जीवन के समग्र जीवन के स्वरूप का वैज्ञानिक उन्नयन करता है और उसे नियमित तथा संयमित मार्ग का दिग्दर्शन कराता है।[5]

इसी प्रकार भारतीय मनीषियों ने मनुष्य के जीवन को वैज्ञानिक ढंग से समुन्नत एवं विकसित बनाने के उद्देश्य से जिन व्यवस्था की नियोजना की उनमें संस्कारों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। जहाँ ये संस्कार व्यक्ति के जीवन को सुसंस्कृत, व्यवस्थित तथा अनुशासित बनाते थे, वहीं इन संस्कारों के द्वारा व्यक्ति तथा समाज दोनों का कल्याण होता था। व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक इन्हीं संस्कारों की महत्ता थी। इस प्रकार संस्कार हिन्दुओं के लिए अत्यन्त अनिवार्य विधान माना जाता है। प्राचीन काल से लेकर आज के वैज्ञानिक युग तक भी अनेक परिवर्तनों के बाद में हिन्दू समाज में इन संस्कारों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।[6]

वर्तमान में हिन्दुत्वके प्रति उपेक्षा एवं विरोध की भावनायें बहुत अधिक बढ़ गयी है। उतनी ही लोगों में संकीर्णता, स्वार्थ, लोभ, घृणा, विलासिता आदि दुष्प्रवृत्तियाँ बढ़ गयी है। हिन्दुत्व की आन्तिरिक शक्ति उसके विज्ञान की अवहेलना करने से ही हिन्दू धर्म का पतन हुआ है। लेकिन हिन्दू धर्म मनुष्य की भावनाओं और विचारों को शुद्ध करता है। स्वार्थहीन तथा गौरवपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देता है। वर्तमान में यदि हिन्दुत्व की चेतना को जागृत किया जाय तो पूरा समाज शक्ति चेतना का पुंज बना हुआ होगा और कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करने में समर्थ हो सकता है क्यों कि हिन्दुत्व राष्ट्रीय एकता की रीढ़ है।

निष्कर्ष

इस शोध पत्र में, लेखक ने हिन्दुत्व की आंतरिक शक्ति उसकी वैज्ञानिकता विषय पर सफलतापूर्वक प्रकाश डाला है। इस शोध पत्र में लेखक हिंदू आध्यात्मिकता और इसके वैज्ञानिक आधारों के बीच जटिल अंतरसंबंध की गहराई से जांच करता है, एक व्यापक विश्लेषण प्रदान करता है जो इन दो अलग–अलग प्रतीत होने वाले क्षेत्रों के बीच गहरे संबंधों को प्रकट करता है। ऐतिहासिक ग्रंथों, दार्शनिक ग्रंथों और अनुभवजन्य साक्ष्यों की सूक्ष्म जांच के माध्यम से, लेखक ने कलात्मक रूप से बताया है कि कैसे हिंदू धर्म का सार केवल विश्वास प्रणालियों से परे ब्रह्मांड और उसके रहस्यों की गहन समझ को शामिल करता है। इसके अलावा, लेखक कुशलतापूर्वक दर्शाता है कि कैसे हिंदू धर्म की अंतर्निहित आध्यात्मिकता आधुनिक वैज्ञानिक प्रतिमानों के साथ मिलती है, जो समकालीन दुनिया में इस प्राचीन परंपरा की स्थायी प्रासंगिकता को दर्शाती है। इस प्रकार, यह अभूतपूर्व अध्ययन हिंदू धर्म की स्थायी अपील और बौद्धिक समृद्धि के प्रमाण के रूप में खड़ा है, जो इसकी कालातीत प्रासंगिकता और गहन अंतर्दृष्टि को प्रदर्शित करता है जो विद्वानों और आध्यात्मिक साधकों को समान रूप से आकर्षित करता है।

संदर्भ

1. डा० राधा कृष्णन, भारतीय संस्कृति कुछ विचार पृ० 8
2. विसेन्ट स्मिथ, कि आक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, 1958, पृ० 7
3. देवेन्द्र कुमार गुप्ता, प्राचीन भारतीय समाज अर्थ व्यवस्था, पृ० 1
4. वही, पृ० 108
5. वही, पृ० 145
6. वही, पृ० 159–160

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202301